आदिकाल

डॉ0 वन्दना श्रीवास्तव
एसो0 प्रो0 हिन्दी विभाग
श्री जे0एन0एम0पी0जी0कॉलेज
लखनऊ

हिन्दी का प्रथम कवि

विभिन्न इतिहासकारों के मतानुसार

इतिहासकार		प्रथम कवि
• शिव सिंह सेंगर	–	पुष्पदन्त
• चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	–	राजा मुंज
• आ0 रामचन्द्र शुक्ल	–	राजा मुंज व भोज
• राहुल सांकृत्यायन	–	सरहपा
• राम कुमार वर्मा	–	स्वयंभू
• नगेन्द्र	–	देवसेन
• गणपति चन्द्र गुप्त	–	शालिभद्र सूरि

आदिकाल

समय सीमा

- ग्रियर्सन — 700 –1300 ई0
- मिश्र बन्धु — 643 – 1286 ई0
  1287–1387 ई0
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल — 1050 – 1375 वि0
- राहुल सांकृत्यायन — 743 – 1343 ई0
- आचार्य हजारी प्र0द्विवेदी– 1000 – 1400 ई0
- डॉ0 रामकुमार वर्मा– 750–1000 व 1000–1375वि0

नामकरण

नाम_ इतिहासकार

- चारण काल – ग्रियर्सन, रामकुमार वर्मा
- आरंभिक काल – मिश्र बन्धु, गणपति चंद्र गुप्त
- बीज वपन काल – आ0महावीर प्रसाद द्विवेदी
- वीरगाथा काल – आ0 रामचन्द्र शुक्ल
- आदि काल – आ0हजारी प्रसाद द्विवेदी, नगेन्द्र
- सिद्ध सामन्त काल – राहुल सांकृत्यायन
- संधिकाल + चारण काल – रामकुमार वर्मा
- वीर काल – आ0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

आदिकालीन साहित्य

- सिद्ध साहित्य
- नाथ साहित्य
- जैन साहित्य
- रासो साहित्य
- प्रकीर्ण अथवा लौकिक साहित्य

सिद्ध साहित्य – सामान्य विशेषतायें

- बौद्ध धर्म की वज्रयानी शाखा का प्रचार करने के लिए लिखा गया साहित्य सिद्ध साहित्य कहलाया।
- सिद्ध भारत के पूर्वी भागों यथा उड़ीसा, बंगाल, बिहार आदि में अधिक सक्रिय रहे।
- इनकी संख्या 84 मानी गयी है।
- इनकी वाणी को चर्यागीत भी कहा गया है।

- जातिवाद, बाह्याचर पर प्रहार व सहज साधना तथा महासुखवाद द्वारा ईश्वर प्राप्ति पर बल
- सिद्धों ने पंच मकारों को अपनाया
- संध्या भाषा व उलटबांसी शैली का प्रयोग
- सिद्ध साहित्य का विभाजन तीन श्रेणियों में किया जा सकता है –

1 नीति या आचार संबंधित साहित्य

2 उपदेशपरक साहित्य

3 साधना संबंधी या रहस्यवादी साहित्य

प्रमुख सिद्ध कवि एवं उनकी रचनायें

<u>सिद्ध कवि</u> – <u>रचनायें</u>

- सरहपा – दोहाकोष
- लुईपा – लुईपाद गीतिका
- शबरपा – चर्यापद, वज्रयोगिनी साधना
- कण्हपा – चर्याचर्य विनिश्चय
- डोम्बिपा – योगचर्या, अक्षरद्विकोपदेश

आदि,,,,

नाथ साहित्य – सामान्य विशेषतायें

- सिद्धों के महासुखवाद के विरोध में नाथ पंथ का उदय हुआ।
- राहुल सांकृत्यायन के अनुसार नाथ पंथ सिद्धों की परंपरा का ही विकसित रूप है।
- नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक – गोरखनाथ
- नाथपंथी भगवान शिव के उपासक हैं।
- जोगी, अवधूत, कौल आदि नाथ पंथ के ही नाम अथवा साधना पद्धतियाँ हैं।

- इनकी सक्रियता भारत के पश्चिमोत्तर भाग में रही
- इनकी संख्या 09 मानी गयी है
- सिद्धों द्वारा अपनाये गये पंचमकारों को नकारा
- नारी भोग का विरोध
- बाह्याडंबरों तथा वर्णाश्रम का विरोध
- योग मार्ग तथा हठयोग साधना पर बल
- आदिनाथ –शिव तथा आदि गुरू –दत्तात्रेय

नाथ परंपरा

- आदिनाथ – भगवान शिव
- 1 मत्स्येन्द्र नाथ (मच्छन्दर नाथ, मीन नाथ)
- 2 गोरखनाथ
- 3 गहिनी नाथ (गौनी नाथ)
- 4 जालंधर नाथ
- 5 कृष्णपाद (कनीफ नाथ, कण्हपा, कानपा)
- 6 भर्तृहरि
- 7 रेवण नाथ
- 8 नागनाथ
- 9 चर्पट नाथ

नाथ गुरु एवं शिष्य परंपरा

आदि नाथ – शिव

आदि गुरु – दत्तात्रेय

गुरू	–	शिष्य
दत्तात्रेय	–	मत्स्येन्द्र नाथ, जलंधर नाथ, रेवण नाथ
जलंधर नाथ	–	कृष्ण पाद
मत्स्येन्द्र नाथ	–	गोरख नाथ
गोरख नाथ	–	गहिनी नाथ, भर्तृहरि, चर्पट नाथ

जैन साहित्य – सामान्य विशेषतायें

- जैन धर्म के प्रचार प्रसार के लिये लिखा गया साहित्य जैन साहित्य कहलाता है।
- गुजरात एवं राजस्थान से विशेष संबन्ध
- धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक विषयों के साथ लोक कथाओं को अपनाया गया
- वैष्णव कथा नायकों को जैन धर्म में दीक्षित दिखाय ा गया
- जैन तीर्थंकरों के जीवन चरित काव्य रूप में प्रस्तुत किये गये।

- काव्य के विविध रुप –प्रबंध काव्य, खण्ड काव्य, मुक्तक सभी का प्रयोग हुआ
- दोहा, रास, चरित, फाग आदि काव्य शैलियों का प्रयोग हुआ
- प्राचीनतम हिन्दी गद्य रचनाओं के प्रमाण
- लोक भाषा का प्रयोग एवं भाषा पर अपभ्रंश का प्रभाव
- उपदेशमूलकता एवं शांत रस प्रधान
- तत्कालीन स्थितियों का यथार्थ चित्रण
- जैन कवि स्वयंभू को 'अपभ्रंश का बाल्मीकि' तथा प्रसिद्ध जैन कवि पुष्पदन्त को 'अपभ्रंश का व्यास' कहा जाता है।

प्रमुख जैन कवि एवं उनकी रचनायें

कवि	रचनायें
स्वयंभू	– पउम चरिउ, रिट्ठणेमि चरिउ
पुष्प दन्त	– महापुराण, णायकुमार चरिउ, जसहर चरिउ
धनपाल	– भविष्यत्त कहा
हेमचन्द्र	– कुमारपालचरित, शब्दानुशासन, छन्दानुशासन
देवसेन	– श्रावकाचार
शालिभद्र सूरि	– भारतेश्वर बाहुबलि रास

सोमप्रभ सूरि – कुमार पाल प्रतिबोध (चम्पू काव्य)
आसगु – चन्दन बाला रास (खण्ड काव्य)
जिन धर्म सूरि – स्थूलि भद्र रास
जिन दत्त सूरि – उपदेश रसायण रास
मुनि राम सिंह – पाहुण दोहा
जोइन्दु – परमात्म प्रकाश(मुक्तक काव्य)
रोडा कवि – राउल बेलि (गद्य)
मेरुतुंग – प्रबंध चिंतामणि
सुमतिगणि – नेमिनाथ रास

.रासो काव्य

'रासो ' शब्द की व्युत्पत्ति

शब्द – इतिहासकार

राजसूय – गार्सा द तासी

रसिक – नरोत्तम स्वामी

रसायण – रामचन्द्र शुक्ल

रास – नंद दुलारे बाजपेयी

रासक – चंद्रबलि पांडेय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, दशरथ ओझा

रहस्य – काशी प्रसाद जायसवाल

प्रमुख रासो ग्रन्थ एवं उनके रचनाकार

रचना	रचनाकार
पृथ्वीराज रासो	चन्दबरदाई
बीसल देव रासो	नरपति नाल्ह
परमाल रासो	जगनिक
हम्मीर रासो	शार्ङ्गधर
खुमान रासो	दलपति विजय
विजयपाल रासो	नल्ल सिंह

बुद्धि रासो	जल्हण
मुंज रासो	अज्ञात
कलियुग रासो	रसिक गोविन्द
कायम खाँ रासो	नियामत खाँ (जान कवि)
राम रासो	समय सुन्दर
राणा रासो	दयाराम
कुमार पाल रासो	देवप्रभ

रासो काव्य – सामान्य विशेषतायें

- मुख्यतः चारण कवियों द्वारा रचना
- आश्रयदाताओं के शौर्य एवं ऐश्वर्य का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन
- युद्धों का सजीव वर्णन
- ऐतिहासिकता का अभाव
- कल्पना की अधिकता के कारण रचनायें संदिग्ध व अर्द्धप्रामाणिक
- वीर रस एवं श्रंगार रस की प्रधानता
- डिंगल व पिंगल शैली का अधिक प्रयोग

प्रकीर्ण अथवा लौकिक साहित्य –

सामान्य विशेषतायें

- धार्मिक एवं प्रशस्ति काव्य से भिन्न लोकधारा का रचनायें
- लोक जीवन की स्वाभाविक दशा व लोकमानस का चित्रण
- स्थानीय भाषा एवं संस्कृति का प्रभाव
- काव्य के साथ गद्य में भी रचनायें

लौकिक साहित्य : प्रमुख रचनायें एवं रचनाकार

काव्य

रचना	रचनाकार
• संदेश रासक	– अब्दुर्रहमान
• ढोला मारू रा दूहा	– अज्ञात(संकलनकर्ता – कवि कल्लोल अथवा कुशल लाभ)
• जयचंद प्रकाश	– भट्ट केदार
• कीर्ति लता, कीर्ति पताका	– विद्यापति
• दो सुखनें, मुकरियाँ, पहेलियाँ	– अमीर खुसरौं

गद्य रचनायें

रचना	रचनाकार
• राउल बेलि	रोडा कवि
• उक्ति व्यक्ति प्रकरण	दामोदर भट्ट
• वर्ण रत्नाकर	ज्योतिरीश्वर ठाकुर
• शब्दानुशासन	हेमचन्द्र
• खालिक बारी	अमीर खुसरो

आदिकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ

- वीर रस की प्रधानता
- युद्धों का सजीव वर्णन
- श्रंगार एवं वीर रस की प्रधानता
- ऐतिहासिकता का अभाव
- कल्पना का बाहुल्य
- राष्ट्रीय एकता का अभाव
- आश्रयदाताओं की प्रशंसा

- हिन्दी कविता का प्रारंभिक रूप
- सांस्कृतिक महत्व
- मुख्यतः प्रबन्ध काव्यों की रचना
- डिंगल पिंगल भाषा की प्रधानता के साथ ही मैथली, ब्रज एवं खड़ी बोली का प्रयोग
- अतिशयोक्ति की प्रधानता
- उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, यमक आदि अलंकारों का प्रयोग।

धन्यवाद